

## शहरी जीवन-क्षमता पर पुनर्विचार: जलवायु-सहनीय शहर क्यों पुराने वैश्विक सूचकांकों की जगह लें

यूपीएससी प्रासंगिकता: सामान्य अध्ययन पेपर-3  
(GS Paper-3) आपदा प्रबंधन

### खबरों में क्यों?

श्रीलंका, इंडोनेशिया, थाईलैंड और फिलीपींस सहित कई एशियाई देशों में हाल ही में आई विनाशकारी बाढ़ ने वैश्विक जीवन-क्षमता (Liveability) और समृद्धि सूचकांकों की प्रमुख खामियों को उजागर किया है। उच्च रेंकिंग के बावजूद, अनेक एशियाई शहर चरम वर्षा (Extreme Rainfall) के दौरान विफल रहे, जो आधुनिक शहरी छवि और वास्तविक जलवायु सहनशीलता (Climate Resilience) के बीच बढ़ते अंतर को दर्शाता है।



### पृष्ठभूमि

मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई जैसे शहरों को उनके आर्थिक उत्पादन, संरक्षण, और बुनियादी ढांचे के आधार पर "वैश्विक मेट्रो" के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र-पर्यावास शहर समृद्धि सूचकांक (UN-Habitat City Prosperity Index), ज्लोबल लाइफ-क्षमता सूचकांक और सिटी रेजिलिएंस इंडेक्स जैसे वैश्विक ढांचे शहरों का मूल्यांकन स्वारूप्य, शिक्षा, कनेक्टिविटी और शासन के आधार पर करते हैं।

हालांकि, ये मापदंड आज के सबसे महत्वपूर्ण प्रृथक का समाधान करने में विफल रहे हैं: क्या कोई शहर अपने निवासियों को जलवायु चरम सीमाओं से बचा सकता है? हाल की एशियाई बाढ़ से यह स्पष्ट होता है कि तर्तमान मापदंड अस्तित्व की अनिवार्यताओं को नज़रअंदाज़ करते हैं।

### एशियाई बाढ़: प्रमुख खुलासे

जलवायु घटनाएँ रेंकिंग और जमीनी तैयारी के बीच बेमेल को उजागर करती हैं:

- श्रीलंका:** वक्रवात 'दितवाह' से बाढ़ और भूरखलन हुआ, जिसमें कोलंबो और पहाड़ी करबों में 400 से अधिक लोगों की जान गई और हज़ारों विस्थापित हुए।
- इंडोनेशिया:** वक्रवाती तूफानों ने सुमात्रा में व्यापक बाढ़ और भूरखलन को जन्म दिया।
- थाईलैंड (हट याई):** सदियों की सबसे भारी वर्षा ने शहर को जलमन्न कर दिया; प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ विफल रहीं।
- फिलीपींस (सेबू एवं विसायास):** टाइफून कालमेनी के कारण निचले इलाके जलमन्न हो गए, जिससे दर्जनों मौतें हुईं और लाखों लोग विस्थापित हुए।

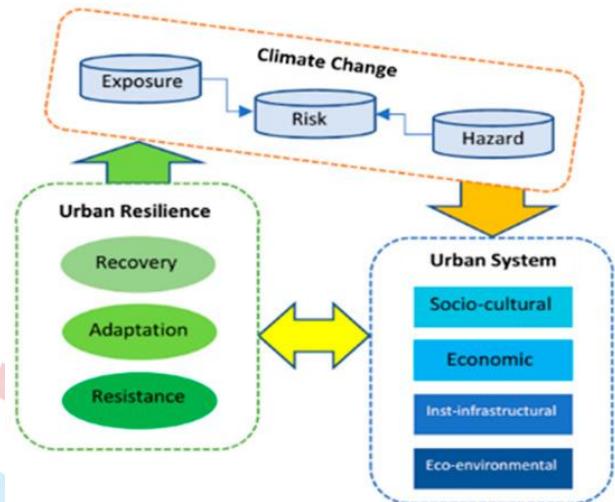
सेबू हट याई और कोलंबो के पहाड़ी करबों जैसे कई असुरक्षित माध्यमिक शहर (Secondary Cities) वैश्विक मूल्यांकन में शामिल नहीं होते, जो एक बड़ा अज्ञात क्षेत्र (Blind Spot) दर्शाता है।

## मौजूदा जीवन-क्षमता सूचकांकों में कमियाँ

### 1. सौदर्य और आर्थिक मापदंडों पर अत्यधिक ज़ोर

सूचकांक अस्पताल, स्कूल, पार्क, योजनागार और नवाचार को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन जल निकासी क्षमता, ढलान स्थिरता, पारिस्थितिक बफर और अनौपचारिक बस्तियों की सुरक्षा को अनदेखा करते हैं। एक शहर उच्च रैंक प्राप्त कर सकता है, फिर भी 300 मिमी बारिश होने पर उसकी तृफानी जल प्रणाली (stormwater system) छह सकती है।

IAS-PCS Inst



### 2. ज़मीनी रसर की भेद्यता (Vulnerability) को समझने में विफलता

शहर-व्यापी औंसत सामाजिक-आर्थिक असमानता को छिपाते हैं। धनी निवासियों के पास सुरक्षा सुनिश्चित करने के साधन होते हैं, जबकि परी-शहरी (Peri-urban) क्षेत्रों के निवासी ऐसी संरचनाओं में रहते हैं जो आपदा में सबसे पहले छह जाती हैं—भले ही वह शहर "जीवन-क्षम" सूचीबद्ध हो। इस प्रकार, जोखिम का गलत मूल्यांकन होता है और यह सबसे कमज़ोर वर्गों पर स्थानांतरित हो जाता है।

### 3. असमान वित्तीयन (Funding) पैटर्न को सुदृढ़ करना

जलवायु अनुकूलन के लिए आवश्यक धन अक्सर उन्हीं धनी महानगरों को मिलता है जिनके पास प्रशासनिक क्षमता और मार्टर प्लान होते हैं। वहाँ, छोटे शहरों, परी-शहरी बेल्टों और पहाड़ी बसितियों—जो अक्सर अधिक आपदा-प्रवण होते हैं—को सीमित समर्थन प्राप्त होता है।

### 4. शहरी शासन की विकृत प्राथमिकताएँ

वैश्विक रैंकिंग सरकार को हवाई अड्डों, मेट्रो लाइनों और सैरेनाहों जैसे चकाचौंध वाली परियोजनाओं (Glamour Projects) की ओर प्रेरित करती है। इससे नालियों की गाट निकालना (Desilting), पुलियों का उन्नयन, भवन संरचनाओं का प्रवर्तन और जोखिम वाले क्षेत्रों से निवासियों का स्थानांतरण जैसे आवश्यक कार्यों से ध्यान हट जाता है।

### असमानता और "आधुनिक" शहरों की अवधारणा

स्मार्ट और "सबसे जीवन-क्षम" शहरों का प्रचार एक झूँठा सुरक्षा भाव पैदा करता है, जिससे गरीबों के लिए मौजूद वास्तविक जोखिम छिप जाते हैं। शहरी नियोजन संरक्षण इन सूचकांकों के पूर्वांकों को अपनाकर जलवायु वास्तविकताओं के प्रति अंधोपन को संरक्षण (Institutionalising Blindness) बना रही हैं।

### आगे की याहु

- जलवायु-सहनीयता मापदंडों का एकीकरण:** सूचकांकों में जल निकासी क्षमता, बाढ़ के मैदानों पर अतिक्रमण, ढलान स्थिरता, अनौपचारिक बसितियों की सुरक्षा और प्रभावी प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को मापने का प्रावधान होना चाहिए।

रिजल्ट का साथी

- शहर-व्यापी से पड़ोस-स्तरीय डेटा की ओर बदलाव:** वास्तविक जोखिम को पकड़ने के लिए स्थानीयकृत भेदाता आकलन का उपयोग किया जाना चाहिए।
- निवेश को जोखिम न्यूनीकरण की ओर पुनर्निर्दिशित करना:** अनुकूलन निधियों को भेद्य माध्यमिक शहरों, खतरा-मानवित्रण (Hazard-mapping) और जल निकासी उन्नयन को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि केवल बड़े बुनियादी ढँचे पर र्याच करना चाहिए।
- शासन प्राथमिकताओं में सुधार:** पुलियों के रखरखाव, भवन संहिताओं के प्रवर्तन, नहरों की बहाली और जोखिम वाले क्षेत्रों से स्थानांतरण को सच्ची आधुनिकता के प्रतीक के रूप में पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

IAS-PCS Institute

### निष्कर्ष

शहरी आधुनिकता को केवल हवाई अड्डों, मेट्रो या व्यापार रैकिंग से परिभाषित नहीं किया जा सकता। एशियाई बाढ़ यह प्रमाणित करती है कि एक वास्तव में जीवन-क्षम और समृद्ध शहर वह है जो अपने निवासियों—विशेषकर सबसे गरीब लोगों—को जलवायु चरम सीमाओं से बचाता है। जैसे-जैसे जलवायु व्यवधान तेज़ हो रहे हैं, भारत और विश्व को कॉस्मेटिक आधुनिकता (Cosmetic Modernity) के बजाय गहरी सहनशीलता (Deep Resilience) को प्राथमिकता देकर शहरी विकास की परिभाषा को पुनः निर्धारित करना होगा।

### UPSC प्रीलिम्स प्रैविट्स प्र०९

**प्र०९:** वैष्णव शहरी रहनेयोग्यता एवं लवीलापन सूचकांकों (global urban liveability and resilience indices) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- आधिकांश अंतर्राष्ट्रीय रहनेयोग्यता सूचकांक शहर-स्तरीय औसतों पर आधारित होते हैं, जो अक्सर शहर के भीतर मौजूद असुरक्षित क्षेत्रों (intra-city vulnerabilities) को छिपा देते हैं।
- UN-Habitat City Prosperity Index और Global Liveability Index जैसे वैष्णव सूचकांक शहरों की जलनिकारी क्षमता (drainage capacity) और ढलान स्थिरता (slope stability) को पर्याप्त रूप से मापते हैं।
- जलवायु अनुकूलन पिता (climate adaptation finance) का आधिकांश हिस्सा बड़े महानगरीय शहरों में जाता है क्योंकि उनके पास विस्तृत शहरी संकेतक (urban indicators) और मास्टर प्लान तैयार करने की संस्थागत क्षमता होती है।
- द्वितीयक शहर (secondary cities) और परि-शहरी क्षेत्र (peri-urban settlements) जलवायु चरम स्थितियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होने के बावजूद अक्सर वैष्णव शहरी प्रदर्शन रैकिंग में शामिल नहीं होते हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (A) केवल एक
- (B) केवल दो
- (C) केवल तीन
- (D) सभी चार

सही उत्तर: (C) केवल तीन



### **UPSC Mains Practice Question-**

**प्रश्न:** “वैश्विक शहरी रहनेयोग्यता सूचकांक (Global Urban Liveability Indices) अक्सर जलवायु चरम स्थितियों (climate extremes) के प्रति शहरों की वास्तविक लाचीलापन क्षमता को दर्शाने में विफल होते हैं।” एशिया में छाल ही में आए बाढ़ के संदर्भ में इस कथन की समालोचनात्मक परीक्षा कीजिए। साथ ही, शहरी रेंटिंग को अधिक जलवायु-सहिष्णु (climate-resilient) और समावेशी बनाने के लिए उपाय सुझाइए। (150–200 शब्द)

**IAS-PCS Institute**



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806

